www.bohalshodhmanjusha.com
Impact Factor : 7.523
Bohal Shodh Manjusha
March 2024
ISSN : 2395-7115
Page No. : 135-140
AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REFEREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES RESEARCH JOURNAL

किशोर बालक : किसकी जिम्मेदारी

डॉ. जयप्रकाश सिंह
सहायक आचार्य कम समन्वयक, दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा केन्द्र, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राज.)

सारांश :–

किशोरावस्था के दौरान बालकों में शारीरिक तथा मनोवैज्ञानिक दृष्टि से अति तीव्र परिवर्तन होता है। जब हम किशोर–किशोरियों को समझने का प्रयास करते हैं तो हम पाते हैं कि इस अवस्था की अपनी अलग ही दुनिया है। इस विषय पर कई शोध एवं अनेकों पुस्तकें छपी हैं, साथ–ही–साथ समय–समय पर सेमिनार, कॉन्फ्रेन्स, कार्यशाला आयोजित की जाती रही हैं, फिर भी यह अहसास होता है कि इसकी दुनिया के बारे में हम कम ही समझ सके हैं। वर्तमान समय में टी.वी. से लेकर बॉलीवुड सिनेमा तक या यू–ट्यूब से लेकर अन्य सोशल मीड़िया (फेसबुक, व्हाट्सऐप, ट्वीटर, इन्स्टाग्राम आदि) से किशोर काल्पनिक दुनिया की चकाचौंध से प्रभावित रहते हैं। यदि हम किशोर–किशोरियों की वास्तविक एवं काल्पनिक दुनिया को देखें तो यह किसी बॉलीवुड फिल्म मसाले के रूप से कुछ कम नहीं दिखता, जिसमें दोस्ती, प्रेम, विद्रोह, आदर, निराशा, कुण्ठा, अपराध प्रवृत्ति, घर से भाग जाने का ख्याल, महत्त्वाकांक्षा, एक–तरफा प्रेम, तिरस्कार, निंदा, आलोचना, अकेलापन आदि इनकी जिन्दगी का अनोखा हिस्सा है।

ये बुद्धिजीवी वयस्कों के बनाये हुए नैतिक–सामाजिक रीति–रिवाज, आर्थिक मापदण्ड, धार्मिक – सांस्कृतिक, राजनीतिक मूल्य या भौगोलिक दायरा–ये सब किशोर–किशोरियों की समझ से परे है। उनकी आंखों पर नासमझी का चश्मा चढ़ा होता है। या यों कहें कि वे समझना नहीं चाहते और यदि हम समझाने का प्रयास करते हैं तो तीखे, तार्किक और सीधे छलनी करने वाले प्रश्न खड़े करते हैं। ऐसी ही अनेक प्रश्नों के साथ अनेक अवसरों पर माता–पिता या अध्यापक लाचार होते हैं। ऐसे में प्रश्न उठता है कि जीवन की इस अमूल्य अवस्था (किशोरावस्था) की जिम्मेदारी किसकी है ?– किशोर–किशोरियों के अभिभावकों की या उसके शिक्षक या समाज की ?

की–वर्ड :– किशोरावस्था, किशोरों की समस्याएँ, किशोर बालक : किसकी जिम्मेदारी।

प्रस्तावना :–

विकास एक सार्वभौमिक प्रक्रिया है, जो प्रत्येक प्राणी में पायी जाती है और जिसका शुभारम्भ जन्म से पूर्व गर्भाधान से ही जारी रहता है। व्यक्ति का सम्पूर्ण विकास कई चरणों में सम्पन्न होता है। विद्वानों में इस विषय पर मतभेद हैं, फिर भी सर्वमान्य वर्गीकरण इस प्रकार है[1] :–

शैशवावस्था	जन्म से 5 या 6 वर्ष तक
बाल्यावस्था	5 या 6 वर्ष से 12 वर्ष तक
किशोरावस्था	12–18 वर्ष के मध्य
प्रौढ़ावस्था	18 वर्ष के बाद

किशोरावस्था :-

मानव–जीवन का विकास एक सतत् प्रक्रिया है। इस दौरान व्यक्ति शैशवावस्था तथा बाल्यावस्था की सीढ़ियां चढ़ता हुआ किशोरावस्था की अवस्था पर पहुंचता है। शैशव अवस्था में बालक की मूल प्रवृत्तियों में परिवर्तन होता है, वहीं बाल्यावस्था में उसमें सामाजिकता का विकास होने के साथ–साथ वैयक्तिक विभिन्नता भी प्रकट होती है। किशोरावस्था (Adolescent) शब्द की उत्पत्ति लेटिन भाषा के शब्द 'Adolescence' से हुई है, जिसका अर्थ परिपक्वता की ओर बढ़ने (to grow or to grow to maturity) से है।

ब्लेयर, जोन्स एवं सिम्पसन ने ठीक ही कहा है कि "किशोरावस्था प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में वह काल है, जो बाल्यावस्था के अंत में आरंभ होता है और प्रौढ़ावस्था के आरम्भ में समाप्त होता है।"[2]

इस अवस्था को कई नामों से जाना जाता है :-

- किशोरावस्था को संक्रमण काल (Transition Period) की अवस्था कहा जाता है।
- किशोरावस्था को संघर्ष, तूफान, तनाव और विरोध (Great stress, strain, storm and strike) की आयु कहा गया है।
- बाल्यावस्था और प्रौढ़ावस्था के मध्य का संधिकाल होता है।
- किशोरावस्था को सुनहली अवस्था (Golden age) भी कहा जाता है।
- किशोरावस्था को टीन एज (Teen age) भी कहा जाता है।
- यह सांवेगिक अस्थिरता (Emotional instability) की अवस्था है।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि किशोरावस्था में सामाजिक, मानसिक, शारीरिक परिपक्वता के साथ–साथ संवेगात्मक परिवर्तन भी तेजी से होता है। किशोरावस्था की एक सर्वमान्य परिभाषा हो सकती है "व्यक्ति पर जैविक एवं सांस्कृतिक घटकों की अंतःक्रिया से उत्पन्न वह अवस्था जबकि वह बाल्यावस्था से प्रौढ़ अवस्था की ओर बढ़ रहा होता है।"[3]

किशोरावस्था का वर्गीकरण :-

सर्वमान्य रूप से किशोरावस्था का निम्न अवधियों में वर्गीकरण किया जा सकता है[4]–

किशोरावस्था का वर्गीकरण	किशोर (लड़का)	किशोरियों (लड़कियों)
पूर्व किशोरावस्था	11–12) वर्ष	10–11 वर्ष
प्रारम्भिक किशोरावस्था	13–17 वर्ष	12–16 वर्ष
उत्तर किशोरावस्था	18–21 वर्ष	17–20 वर्ष

किशोरावस्था में किशोरों की समस्याएँ :-

सामान्यतः किशोरावस्था में किशोरों में होने वाली समस्याएं निम्न प्रकार की पायी जाती हैं–

शरीर एवं स्वयं से सम्बन्धित समस्याएं :-

इसमें स्वयं के शरीर की बनावट एवं आंतरिक रासायनिक परिवर्तन से उत्पन्न होने वाली समस्याएं होती हैं। जैसे– शारीरिक रूप/छवि, मुहांसे, रंग, भोजन सम्बन्धी बुरी आदतें, शारीरिक परिवर्तन, मुड़ी होना, भावुकता, क्रोध, अतिसंवेदनशीलता, विद्रोह की भावना, आकर्षण, ख्याली पुलाव बनाना, सपने देखना, यौन संक्रमिक बीमारियां आदि।

परिवार से सम्बन्धित समस्याएं :-

इसके अंतर्गत परिवार से सम्बन्धित एवं घर के वातावरण के प्रभाव से उत्पन्न होने वाली समस्याएं आती हैं। जैसे– माता–पिता का आपसी सम्बन्ध का अच्छा न होना, माता–पिता का नेतृत्व/आधिपत्य, खराब सम्पर्क, परिवार की निम्न आर्थिक–सामाजिक स्तर, तनावपूर्ण पारिवारिक वातावरण, एकल या संयुक्त परिवार के सदस्यों के आपसी सम्बन्ध अच्छा न होना आदि।

स्कूल से सम्बन्धित समस्याएं :-

इसके अंतर्गत स्कूल से सम्बन्धित एवं उसके वातावरण के प्रभाव से उत्पन्न होने वाली समस्याएं होती हैं। जैसे– स्कूल का वातावरण प्रजातांत्रिक न होना, कड़े शिक्षक, शिक्षक का पक्षपातपूर्ण व्यवहार का होना, सभी शिक्षकों के आपसी सम्बन्ध, स्कूल का लम्बा समय, बन्द स्कूल (बार–बार या लम्बे समय के लिए), लम्बा जाना–आना, कोई सहगामी कार्य, भागीदारी न होना आदि।

समाज से सम्बन्धित समस्याएं :-

इसके अंतर्गत किशोर जिस समाज में रहता है, वहां के बनाये नियम, मान्यतायें, वातावरण, संस्कृति से जुड़ी समस्याएं आती हैं। जैसे– जातिगत सम्बन्धी समस्याएं, लिंग पक्षपात, पीढ़ी में ज्यादा अंतर, रूढ़िवादी पद्धति, दमनात्मक माहौल, अत्यधिक उम्मीदें, मित्रों की कमी या अधिकता, गलत माहौल होना, अन्य सामाजिक समस्याएं आदि।

उपरोक्त के अलावा भी समय एवं परिस्थिति के अनुसार किशोरावस्था में किशोरों के सामने नई समस्याएं उत्पन्न हो सकती हैं। किशोर की इन समस्याओं के उत्पन्न कारणों में प्रमुख रूप से अध्यापक एवं माता–पिता के उचित मार्गदर्शन की कमी, सम आयु समूहों के साथ गलत संगत, मीड़िया का अनुचित प्रभाव के साथ–साथ समाज में रह रहे लोगों की स्वार्थी सोच है, जिसका उचित मार्गदर्शन तथा निर्देशन के द्वारा विजय प्राप्त की जा सकती है।

जिम्मेदारी किसकी :-

उपर्युक्त समस्याओं को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि किशोरावस्था के बालकों की जिम्मेदारी किसी एक व्यक्ति विशेष (माता–पिता, शिक्षक और समाज) पर नहीं थोपी जा सकती।

माता-पिता :-

यह सच है कि बच्चे का अधिकांश समय घर पर व्यतीत होता है। इस समय माता–पिता की सकारात्मक सोच, उचित व्यवहार एवं कार्य–कौशलता काफी महत्त्वपूर्ण होती है। किशोर के दृष्टिकोण का निर्माण उस वातावरण के अनुसार होता है जिसमें वह पला–बढ़ा होता है। उसके सोच, व्यवहार एवं जीवन–अनुभव भी उसी के अनुरूप होते हैं।

समाज :-

घर के बाद समाज में आस–पास रहने वाले पड़ौसियों या जिस सामाजिक वातावरण में रहता है, वहां के वातावरण का बहुत प्रभाव किशोर–किशोरियों पर पड़ता है। इसलिए वातावरण ऐसा होना चाहिए, जिसमें किशोर अपनी मूलभूत आवश्यकताओं के साथ–साथ अपने विचारों की अभिव्यक्ति भी कर सके। समाज प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष किन्तु प्रभावपूर्ण ढंग से किशोर की आदतों, विचारों एवं स्वभाव को मोड़ता है। उसकी संस्कृति, रहन–सहन, बोलचाल आदि अनेक बातों पर समाज की छाप होती है। जैसे– यदि संगीतज्ञ के साथ रहता है तो उसकी संगीत कौशलता से प्रभावित होता है। इसमें उसकी विशेष रूचि उत्पन्न होती है।

शिक्षक :-

आज के तकनीकी दौर में जहां सूचना तथा अनन्त ज्ञान तो खोजने एवं एकत्र करने में कम्प्यूटर की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहती है। कितनी भी उपयोगी पुस्तकें, पाठ्यक्रम एवं मूल्यांकन प्रणाली उपलब्ध हों, तब तक उपयोगी नहीं हो सकता, जब–तक कुशल शिक्षक द्वारा सम्पादित न हो। कुशल शिक्षक ही किशोर के अन्तर्निहित क्षमताओं को पहचान कर उसको उचित मार्गदर्शन देता है। डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने सत्य ही कहा है कि "वास्तवित शिक्षक वह है जो एक बच्चे को आने वाले कल की चुनौतियों के लिए तैयार करे, न कि उसके दिमाग को सिर्फ किताबी ज्ञान से भरे।" जिस विद्यालय में किशोर पढ़ते हैं उस विद्यालय का वातावरण, शिक्षकों की कार्य–कुशलता एवं व्यवहार का प्रभाव भी काफी महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा करती है।

किशोरों के निर्माण में "शिक्षा" का महत्त्वपूर्ण योगदान होता है। किशोरों के बौद्धिक एवं व्यक्तित्व विकास, उचित मार्गदर्शन और समाज के नव–निर्माण करने में महत्त्वपूर्ण साधन 'शिक्षा' है। "शिक्षा मनोविज्ञान" से किशोरों में सोचने–समझने, भावनाओं एवं संवेगों पर नियंत्रण, व्यवहार कौशलता, सही–गलत का निर्णय लेने की क्षमता विकसित की जा सकती है। किशोरों की शिक्षा के लिए यह जरूरी है कि माता–पिता एवं शिक्षक दोनों को भी "किशोर मनोविज्ञान" की अच्छी समझ हो, जिससे उनमें सही अभिरूचि के विकास में सहयोगी हो सकें। इसलिए किशोर बालकों की जिम्मेदारी समग्र रूप से माता–पिता, शिक्षक एवं समाज में रहने वाले सभी लोगों की होगी।

अन्य विशेष ध्यान देने योग्य बातें :-

- किशोरावस्था के दौरान जहां किशोर–किशोरियां अपने पारिवारिक वातावरण के साथ–साथ अब सामाजिक वातावरण में गोते लगाते हैं, जहां पारिवारिक रिश्तों से ज्यादा अपने दोस्तों के साथ समय बिताना ज्यादा पसंद करने लगते हैं या यों कहें कि कभी–कभी ये परिवार से कटने या दुरियां उत्पन्न होने जैसी स्थिति हो जाती है, ऐसी स्थिति में अन्य विशेष बातें ध्यान देने की आवश्यकता होती है।
- किशोरावस्था में होने वाले परिवर्तन की चर्चा बच्चों से करें। उनकी भावनाओं को समझते हुए उनमें सहज महसूस करवायें कि इस समय इस तरह के परिवर्तन सामान्य हैं।
- ऐसा उचित माहौल बनायें कि इस अवस्था से जुड़े सवाल पूछने में (शारीरिक परिवर्तन, कामुकता, रिश्तों) हिचकिचाहट न कर सकें। इसके लिए एक अच्छे दोस्त की भूमिका निभानी होगी।
- उनकी गलतियों (किशोर–किशोरियों) को बढ़ा–चढ़ाकर पेश करने की जगह उन्हें उचित मार्गदर्शन के साथ प्रेरणा जागृत करने का प्रयास करना होगा।
- उन पर अपने फैसले या अधिकार थोपने की जगह उन्हें परिस्थितियों के साथ विवेकपूर्ण ढंग के साथ

सम्मिलित होवें।

– अपने आदर्श मॉडल (कार्य कौशल, व्यवहार एवं अनुशासन) से एक सकारात्मक सोच विकसित करने का प्रयास करें।

– हमेशा सकारात्मक सोच के साथ बातचीत करें। उनमें जिम्मेदारी का एहसास करवाकर उन्हें विपरीत परिस्थितियों में सम्बल प्रदान करें।

– उनको हमेशा सहयोग एवं स्वतंत्रता की भावना के साथ–साथ जरूरत पड़ने पर आप उनके साथ हैं, ऐसा एहसास होना चाहिए।

निष्कर्ष :–

किशोरावस्था में बालक को न बालक कह सकते हैं और न प्रौढ़ व्यक्ति मान सकते हैं। इस अवस्था में शैक्षिक, सामाजिक, संवेगात्मक, शारीरिक एवं मानसिक अस्थिरता आदि परिवर्तन होते हैं। यही कारण है कि किशोरावस्था में अनेक समस्याएं उत्पन्न हो जाती हैं, जिससे किशोर अनेक अवांछनीय व्यवहार प्रकट करते हैं। कई बार ये अभिभावक एवं अध्यापक भी भौचक हो जाते हैं। किशोरावस्था में होने वाले विभिन्न तरह के शारीरिक परिवर्तन, संवेगात्मक अस्थिरता एवं सामाजिक समायोजन के साथ–साथ किशोर मनोविज्ञान का ज्ञान अभिभावक एवं शिक्षक सहयोगियों को पूर्ण रूपेण न होने के कारण वे अपने दायित्वों का पूर्ण निर्वहन नहीं कर पाते, जिससे किशोर–किशोरियों में अवांछनीय व्यवहार देखने को मिलता है। अतः आवश्यक है कि शिक्षक एवं अभिभावक भी किशोर मनोविज्ञान को समझें। साथ ही साथ किशोरों को प्रारम्भ से अभिभावक एवं शिक्षक द्वारा उचित वातावरण, मार्गदर्शन एवं शिक्षा प्रदान की जाये, जिससे वे अपनी समस्याओं पर विजय पाकर जीवन में सफल हो सकें। यह तभी संभव है, जब अभिभावक, शिक्षक एवं समाज में रहने वाले लोग मिलकर यह समझें कि किशोर बालकों की जिम्मेदारी किसी एक की न होकर हम सबकी है और इसे ही केन्द्र बिन्दु मानते हुए अपने कर्त्तव्य और जिम्मेदारियों का निर्वहन निःस्वार्थ भाव से करें।

संदर्भ ग्रन्थ :–

1. मंगल, एस.के., पाठक, पी.डी., "अभिगमकर्त्ता का विकास एवं शिक्षा अधिगम प्रक्रिया", अग्रवाल पब्लिकेशन्स, आगरा–2, 2009, पृ. 41
2. वहीं, पृ. 51
3. मिश्रा, महेन्द्र कुमार, "किशोर मनोविज्ञान", यूनिवर्सिटी बुक हाउस प्रा.लि., जयपुर–3, 2007, पृ. 8
4. श्रीवास्तव, रामजी एवं अन्य, "आधुनिक विकासात्मक मनोविज्ञान", मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली–7, 2005, पृ. 150

संदर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. मूरजानी, जानकी, नारंग, दर्शन कौर एवं मोहन, मणिका, "बाल विकास का मनोविज्ञान", अपोलो प्रकाशन, जयपुर, 2009
2. सिडाना, अशोक कुमार एवं अन्य, "बाल्यावस्था एवं विकास", शिक्षा प्रकाशन, जयपुर, 2015

दास, भगवान, ''बाल विकास'', ओमेगा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली–62, 2014
3. पाठक, पी.डी., ''शिक्षा मनोविज्ञान'', विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा–2, 2015
4. काबरा, रूपनारायण, ''बच्चे नहीं होते समस्या'', नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली–2
5. जादौन, सीमा, ''किशोरावस्था में सामाजिक समायोजन की समस्या'', इन्टरनेशनल जर्नल ऑफ एडवान्स्ड
6. रिसर्च एण्ड डेवलपमेन्ट, आई.एस.एस.एन. : 2455–4030, वोल्यूम–3, अंक–2, मार्च 2018, पृ. 428–429
www.nios.ac.in, 328 psychology lesson 13, किशोरावस्था, p. 45.
7.